

## पद २६९

(राग: काफी – ताल: त्रिताल)

नंदके चरावत गायी सब ब्रजमांही ॥ ध्रु. ॥ बन बन बजावे मुरली ।  
मुरलीके नाद सुनायी ॥१॥ संग लिये गोपालन-मेला । वोही मेघन  
सांवला ॥२॥ मानिक कहतसे ताहोकू । तोहे ध्यान देना  
मोहेकू ॥३॥